BAD KIRDAR KI TAUBA (HINDI)

बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त की म-दनी बहारें हिस्सा 1

बद किरदार की तौबा

- बद मआ़श, मुबल्लिग़ कैसे बना ? 8
- बख़्शिश का परवाना 10
- दहरिये की तौबा 16
- चोर ने माल वापस कर दिया 19
- झगड़ालू सधर गया 23
- गुर्दे की पथरी 25

مکتبۃ المدینہ (دعوتِ اسلامی)

المدینۃ العلمیۃ (دعوتِ اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (اَلْمُستطرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

बद किरदार की तौबा

येह रिसाला **(बद किरदार की तौबा)**

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है, इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद, गुजरात।

MO. 09374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ब क़दरे ज़रूरत इ़ल्मे दीन ह़ासिल करना हर मुसल्मान पर फ़र्ज़ है। चुनान्चे ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : اُطْلُبُوا الْعِلْمَ وَلَوْ بِالصِّیْنِ فَاِنَّ طَلَبَ الْعِلْمِ فَرِیْضَۃٌ عَلٰی کُلِّ مُسْلِمٍ या'नी इ़ल्म ह़ासिल करो अगर्चे चीन जाना पड़े क्यूं कि इ़ल्म ह़ासिल करना हर मुसल्मान पर फ़र्ज़ है।

(شعب الایمان،باب فی طلب العلم،حدیث ۱۶۶۳ جلد۲ صفحه ۲۵٤)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी का महका महका म-दनी माह़ोल हमें इ़ल्मे दीन सीखने के बे शुमार मवाक़ेअ़ फ़राहम करता है। इन में से एक दा'वते इस्लामी के तह़्त होने वाला **तीन रोज़ा बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़** भी है। इस सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में इ़ल्मे दीन सीखने की ख़ा़तिर शिर्कत करने वाले इस्लामी भाई इ़ल्मे दीन से अपनी झोलियां भर भर कर लौटते हैं। इस बा ब-र-कत इज्तिमाअ़ में हुसूले इ़ल्मे दीन के इ़लावा ज़िम्नन और भी कई फ़वाइद ह़ासिल होते हैं, म-सलन बीमारियों से शिफ़ायाबी, गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ख़ला़सी, मुश्किलात का ह़ल होना वग़ैरा। इस के इ़लावा इस इज्तिमाए़ पाक में दुआ़ओं के क़बूल होने के भी बे

शुमार वाक़िआ़त मिलते हैं। क्यूं कि मुसल्मानों का मज्मए़ कसीर भी इजाबते दुआ़ के मवाक़ेअ़ में से है चुनान्चे सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत **मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 8 सफ़ह़ा 522 पर **मुस्तदरक** के ह़वाले से एक ह़दीसे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं : ''ह़ज़रते ह़बीब मुस्लिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कि मुस्तजाबुद्दा'वात थे, फ़रमाते हैं मैं ने हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि कोई गुरौह जम्अ़ न होगा कि इन के बा'ज़ दुआ़ करें बा'ज़ आमीन कहें, मगर येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की दुआ़ क़बूल फ़रमाएगा।''

(المستدرك على الصحيحين حديث٥٥٢٩، جلد٤ صفحه٤١٧،مطبوعه دارالمعرفة بيروت)

आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت मज़ीद फ़रमाते हैं : ''उ़-लमा ने मज्मए़ मुसल्मान को अवक़ाते इजाबत (क़बूलिय्यत) से शुमार किया। ह़िस्ने ह़सीन में है : मज्मए़ मुस्लिमीन का अवक़ाते इजाबत से होना ह़दीसे सिह़ाह़ सित्ता से मुस्तफ़ाद है। ह़ज़रत मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْبَارِى (ह़िस्ने ह़सीन के मज़्कूरा जुम्ले की) शर्ह़ में फ़रमाते हैं : या'नी जिस क़दर मज्मअ़ कसीर होगा जैसे जुमुआ़ व ईदैन व अ़-रफ़ात में, इसी क़दर उम्मीदे इजाबत ज़ाहिर तर होगी।''

(फ़तावा र-ज़विय्या (मुख़र्रजा), जिल्द : 8, सफ़ह़ा : 522 ता 523)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़्त होने वाले हफ़्तावार,

सूबाई और बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में इस्लामी भाइयों का मज्मए़ कसीर होता है। और शु-रका इस्लामी भाई इन इज्तिमाआ़त में होने वाली रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ओं से ख़ूब ब-र-कतें ह़ासिल करते हैं।

दा'वते इस्लामी की मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** की त़रफ़ से बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ से ह़ासिल होने वाली ब-रकात म-सलन हुसूले इ़ल्मे दीन, बीमारियों से शिफ़ायाबी, गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ख़लासी, मुश्किलात के ह़ल और दुआ़ओं की क़बूलिय्यत वग़ैरा पर मुश्तमिल 14 म-दनी बहारें बनाम **''बद किरदार की तौबा''** पेश करने की सआ़दत ह़ासिल की जा रही है।

अल्लाह तआ़ला हमें **''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश''** करने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **म-दनी क़ाफ़िलों** का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और **दा'वते इस्लामी** की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शो'बए अमीरे अहले सुन्नत

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

23 **स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र** सि. 1431 हि. **9** फ़रवरी सि. **2010** ई.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले **''जिन्नात का बादशाह''** में ह़दीसे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं कि **नबियों** के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान, सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है, ''जिस ने मुझ पर रोज़े **जुमुआ़** दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के **दो सो साल** के गुनाह मुआ़फ़ होंगे।'' (کنزالعُمّال ج۱ص۲۵۶ حدیث ۲۲۳۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿1﴾ बद किरदार की तौबा

गूजरां वाला (पंजाब, पाकिस्तान) के मुक़ीम इस्लामी भाई के तह़रीरी बयान का ख़ुलासा है : मैं ने एक मॉडर्न घराने में आंख खोली, होश संभाला तो अपने गिर्दो नवाह़ में शबो रोज़ गानों बाजों ही की आवाज़ें सुनीं जिस की वजह से मैं गुनाहों की दलदल में फंसता चला गया। **हम सात भाई हैं लेकिन अफ़्सोस कि सब के सब एक दूसरे से बढ़ कर मॉडर्न और फ़ेशन एबल थे।**

मैं गानों का इस क़दर रसिया हो चुका था कि नवीं क्लास से ही बड़े भाई के साथ मिल कर वीडियो और म्यूज़िक सेन्टर खोल लिया। **सुब्ह व शाम घरों में किराए पर V.C.R लगा कर फ़िल्में दिखाना महल्ले भर में मेरी पहचान बन चुकी थी।** जिस दिन V.C.R किराए पर न जाता वीडियों सेन्टर पर दोस्तों को जम्अ़ कर के फ़ोहूश फ़िल्में ख़ुद भी देखता और उन्हें भी दिखाता। शाम के वक़्त रोज़ाना बुलन्द आवाज़ में गाने चला कर महल्ले के लोगों को परेशान करता। **अगर कभी कोई गाने बन्द करने या आवाज़ ही आहिस्ता करने का कह देता तो मैं मरने मारने के लिये तय्यार हो जाता।** गानों की केसिट रेकॉर्ड करने में इतना मास्टर था कि पुराने से पुराना और नए से नया गाना किस फ़िल्म का और किस केसिट में है फ़ौरन बता देता, गानों की बीसियों केसिटें रोज़ाना रेकॉर्ड करता, **लड़कियों से दोस्ती कर के उन्हें मोटर साइकिल पर सैर करवाता।** मेरी सआ़दतों की मे'राज का सफ़र यूं शुरूअ़ हुवा कि हमारे अ़लाक़े में दा'वते इस्लामी के तहूत होने वाले सि. 1409 हि. ब मुताबिक़ सि. 1988 ई. के बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़की धूम थी। एक मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी ने मुलाक़ात के दौरान इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए मुझे बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (जो कि उन दिनों बाबुल मदीना कराची में होता

था) की दा'वत दी। मैं ने उस वक़्त तो हां कर दी, बा'द में शैत़ानी वसाविस ने मेरे इरादे को यूं मु-त-ज़लज़िल करना शुरूअ़ कर दिया कि इतनी दूर कैसे दिल लगेगा ? मौलवियों के साथ कैसे रहूंगा ? येही सोच कर मैं ने इरादा बदल दिया। वोह इस्लामी भाई दोबारा तशरीफ़ लाए और इज्तिमाअ़ के लिये फिर से इन्फ़िरादी कोशिश करने लगे बिल आख़िर **उन के महब्बत भरे अन्दाज़ से मु-तअस्सिर हो कर मैं ने किराया जम्अ़ करवा दिया।** اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ खुसूसी ट्रेन दाता एक्सप्रेस के ज़रीए़ हमारा क़ाफ़िला दा'वते इस्लामी के बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ के लिये रवाना हुवा। **दौराने सफ़र वक़्तन फ़ वक़्तन होने वाली पुरसोज़ ना'त ख़्वानी, सुन्नतें सीखने सिखाने और दुआ़एं याद करने के तरबिय्यती ह़ल्क़ों ने ही मेरे दिल में हलचल मचा दी थी,** फिर बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ की मुख़्तलिफ़ निशस्तों में होने वाले सुन्नतों भरे बयानात ने सोने पर सुहागे का काम किया, मगर अभी तक मेरे दिल में दुन्या की रंगीनियों का असर बाक़ी था। आख़िरी दिन शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत**, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के पुरसोज़ सुन्नतों भरे बयान, तसव्वुरे मदीना और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ ने मेरे दिल पर पड़े

ग़फ़्लतों के कसीफ़ पर्दे चाक कर के रख दिये । **मेरी आंखों से गुनाहों के बादल छट कर नदामत के आंसू रवां हो गए ।** मैं ने उसी वक़्त अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों से तौबा की और वापस आते ही वीडियो सेन्टर को हमेशा हमेशा के लिये बन्द कर दिया । दाढ़ी शरीफ़ सजा कर फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स देना शुरूअ़ कर दिया । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर डिवीज़न मुशा-वरत ज़िम्मादार होने के साथ साथ पाकिस्तान इन्तिज़ामी काबीना के रुक्न की ह़ैसिय्यत से सुन्नतों की ख़िदमत की सआ़दत ह़ासिल कर रहा हूं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾2﴿ उ़म्रह की सआ़दत नसीब हो गई

भाईफ़ैरू (क़ुसूर, पंजाब पाकिस्तान) में मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : एक मुसल्मान होने की ह़ैसिय्यत से मेरे दिल में ख़्वाहिश बेदार हुई कि अपनी ज़िन्दगी में एक बार **का'बतुल्लाह शरीफ़** और **सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद** के पुरकैफ़ नज़ारों से अपनी आंखों की प्यास बुझाऊं । **मगर आह ! ह़ाज़िरिये मदीना की कोई सूरत दिखाई न देती थी ।** हमारे अ़लाक़े में दा'वते इस्लामी के तह़्त मदीनतुल औलिया मुलतान में होने वाले

सि. 1425 हि. ब मुत़ाबिक़ सि. 2004 ई. के बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की तय्यारियां उ़रूज पर थीं। मैं ने दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में दुआ़ओं की क़बूलिय्यत के वाक़िआ़त सुन रखे थे। चुनान्चे मैं ने इज्तिमाअ़ में शरीक हो कर ह़ाज़िरिये मदीना के लिये रो रो कर दुआ़एं मांगीं **"या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे मेरे घर वालों समेत ज़ियारते का'बतुल मुशर्रफ़ा और ह़ाज़िरिये मदीनतुल मुनव्वरह का शरफ़ अ़त़ा फ़रमा।"** اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में मांगी जाने वाली दुआ़ क़बूल हुई और कुछ ही अ़र्से बा'द मुझे और मेरे बच्चों की अम्मी को उ़म्रह की सआ़दत नसीब हो गई।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾3﴿ बद मआ़श, मुबल्लिग़ कैसे बना ?

सरदारआबाद (फ़ैसलआबाद, पंजाब) के मुक़ीम इस्लामी भाई के तह़रीरी बयान का ख़ुलासा है : दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होने से क़ब्ल मेरा तअ़ल्लुक़ पंजाब के एक बदनामे ज़माना बद मआ़श ग्रूप से था। आए दिन डाके डालना, मुजरिमों को ग़ैर क़ानूनी अस्लिह़ा फ़राहम करना और गाड़ियां लूटना मेरा मा'मूल था नीज़ किराए पर क़त्लो ग़ारत गरी जैसे घिनावने जराइम में मुलव्वस हो चुका था। दा'वते इस्लामी के मदीनतुल

औलिया मुलतान में होने वाले सि. 1427 हि. ब मुताबिक़ सि. 2006 ई. के तीन रोज़ा बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ का चरचा था। एक दिन मेरी मुलाक़ात सफ़ेद लिबास में मल्बूस सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ सजाए एक मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी से हो गई। दौराने मुलाक़ात उन्हों ने मुझे सुन्नतों भरे बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ की दा'वत पेश की तो मैं ने जान छुड़ाने के लिये कई उ़ज़्र पेश किये मगर वोह इस्लामी भाई मुझे निहायत शफ़्क़त भरे लहजे में समझाते रहे बिल आख़िर मैं ने कहा मेरा एक मस्अला है अगर वोह ह़ल हो गया तो इज्तिमाअ़ में शिर्कत करूंगा। उस मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी ने निहायत मह़ब्बत भरे अन्दाज़ में कहा "आप इज्तिमाअ़ में चलें اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप का मस्अला ह़ल फ़रमा देगा।" उन की इस बात पर मैं सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में जाने के लिये तय्यार हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **इज्तिमाअ़ गाह में ह़ाज़िरी के पहले ही रोज़ घर से फ़ोन आया कि वोह मस्अला ह़ल हो चुका है।** इस दिलकुशा ख़बर से मेरे तन बदन में ख़ुशी की लहर दौड़ गई। इस ख़बर पर मैं शु-रकाए इज्तिमाअ़ से गले मिल कर अपनी ख़ुशी का इ़ज़्हार करने लगा। इज्तिमाअ़ की ब-र-कत से मैं हाथों हाथ बारह दिन के म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। म-दनी क़ाफ़िले के बा'द

जब मैं वापस पलटा तो मेरी ज़िन्दगी में म–दनी इन्क़िलाब बरपा हो चुका था, मैं ने अपने चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ सजाने की निय्यत कर ली और सर पर इमामा शरीफ़ का ताज सजा लिया। कुछ दिनों बा'द ख़त्म शरीफ़ की एक महफ़िल मुन्अक़िद हुई उस महफ़िल में मेरे मामूं भी तशरीफ़ लाए हुए थे और दा'वते इस्लामी के ज़िम्मादार इस्लामी भाई भी मौजूद थे। मेरे मामूं ने सब के सामने बर–मला इज़्हार किया कि **दा'वते इस्लामी वालों ने हमारे भान्जे को शैतान से इन्सान बना दिया।** वोह शख़्स जो गुनाहों की तारीक वादी में भटक रहा था म–दनी माहोल के म–दनी रंग में रंग गया। और मुझ पर ऐसा करम हुवा कि आज अ़लाक़ाई मुशा–वरत के निगरान की हैसिय्यत से सुन्नतों की ख़िदमत के लिये कोशां हूं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾4﴿ बख़्शिश का परवाना

उ़मर कोट (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : सि. 1426 हि. की बात है एक इस्लामी भाई (मुहम्मद आ़मिर अ़त्तारी) जो कि बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ से वापसी पर ह़ादिसे में शहीद हो गए थे उन की शहादत के बा'द उन की वालिदा ने ख़्वाब में देखा कि वोह कह रहे थे : **"अम्मीजान मेरे लिये परेशान क्यूं हैं ? मैं तो ज़िन्दा हूं"** इस

के बा'द एक मरतबा वोह इस्लामी भाई (मुहम्मद आमिर अत्तारी) मेरे ख़्वाब में तशरीफ़ लाए तो मैं ने उन से पूछा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ-मला फ़रमाया ? तो कहने लगे : ''اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मैं ख़ैरियत से हूं और इज्तिमाअ़ की ब-र-कत से अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने मुझे बख़्श दिया है ।''**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ैरे नबी का ख़्वाब शरीअ़त में हुज्जत नहीं लेकिन इन ख़्वाबों से ताईद और तक़्विय्यत ह़ासिल की जा सकती है ताकि गुनाहगार इन की बिना पर उम्मीद बांधे और उन के मुत़ाबिक़ अ़मल करे, हो सकता है **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्ल पर ए'तिमाद के सबब उसे भी ऐसा ही फ़ाएदा ह़ासिल हो जाए। (مطالع المسرات شرح دلائل الخیرات مترجم ص122 نوریہ رضویہ پبلیکیشنز مرکز الاولیاء لاہور)

इस लिये हमें भी अपनी दुन्यावी व उख़्वी ज़िन्दगी की काम्याबी के लिये दा'वते इस्लामी के हर इज्तिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत करनी चाहिये। अगर आप अभी तक गुनाहों की दलदल में फंसे हैं तो मायूस न हों कि मायूसी **अल्लाह** तआ़ला को ना पसन्द है। बल्कि उस की रह़मते अ़ज़ीमा के उम्मीद वार बन कर दा'वते इस्लामी के मुश्कबार म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो

जाइये । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ करम ही करम होगा ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾5﴿ ईमान अफ़रोज़ ख़्वाब

सरदारआबाद (फ़ैसलआबाद, पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : मैं ने अपने अ़लाक़े के एक इस्लामी भाई की इन्फ़िरादी कोशिश से दा'वते इस्लामी के तह़्त होने वाले बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल की । इज्तिमाअ़ से वापसी के बा'द एक रोज़ मैं घर में सोया । ज़ाहिरी आंखों के बन्द होते ही दिल की आंखें खुल गईं, क्या देखता हूं क़ियामत बरपा है, सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, अह़मदे मुज्तबा, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जल्वा फ़रमा हैं, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ और सब्ज़ इ़मामे वालों का जम्मे ग़फ़ीर भी ह़ाज़िरे ख़िदमत है । शफ़ीए़ रोज़े शुमार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे फ़रमाते हैं कि **येह जन्नत की टिकिटें तक़्सीम कर दो !** चुनान्चे मैं ने हुक्म की ता'मील की, टिकिट तक़्सीम करने के बा'द एक बच गई तो बे कसों के वाली, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया येह भी बांट दो ! उस को बांटने के बा'द मैं ख़ाली हाथ रह जाने पर ग़मज़दा हो गया कि आह ! अब मैं जन्नत के टिकट से महरूम रह गया । अभी मैं सोच ही रहा था कि फ़क़ीरों के मल्जा,

यतीमों के मावा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन टिकिटें निकालीं और एक टिकिट मुझे अ़ता फ़रमा कर जन्नत में दाख़िले की सनद अ़ता फ़रमा दी। इस रूह़ परवर मन्ज़र ने मुझे राहे ह़क़ का दाई़ बना दिया, सब्ज़ इ़मामे का ताज और सुन्नत के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की सोच अ़ता फ़रमा दी और आ़शिक़ाने मुस्त़फ़ा की रफ़ाक़त नसीब हो गई।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾6﴿ शिकारी ख़ुद शिकार हो गया

रह़मतआबाद (एबटआबाद, सरह़द, पाकिस्तान) के मुक़ीम इस्लामी भाई की तह़रीर का ख़ुलासा है : दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी से क़ब्ल मैं बद मज़्हबों की सोह़बत में फंसा हुवा था और इस सोह़बत की नुह़ूसत की वजह से मेरे ज़ेह़न में येह बात सब्त हो चुकी थी कि مَعَاذَاللّٰہ अहले सुन्नत शिर्क व बिदअ़त के मुर-तकिब हैं। शिर्क व बिदअ़त की गर्दान मेरी ज़बान पर ऐसे जारी रहती जैसे तोते को कोई चीज़ याद करवाई जाए तो वोह बार बार उस बात की तक्रार करता है। इसी गुमराही में ज़िन्दगी के नादिर लम्ह़ात गुज़र रहे थे। एक रोज़ एक आ़शिक़े रसूल इस्लामी भाई ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए मुझे दा'वते इस्लामी के बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ की दा'वत पेश की लेकिन मैं न जाने पर मुसिर रहा। वोह इस्लामी भाई भी इस्तिक़ामत के साथ

मुसल्सल मुझ पर इन्फ़िरादी कोशिश करते रहे और हिक्मत भरे अन्दाज़ से मुझे इज्तिमाअ़ में शिर्कत के लिये क़ाइल कर लिया। मैं इज्तिमाअ़ में शिर्कत के लिये तय्यार तो हो गया लेकिन ज़ेह्न येह था कि वहां जा कर शिर्क व बिदअ़त होते हुए क़रीब से देखने का मौक़अ़ मिल जाएगा फिर ख़ूब इन का तमाशा बनाऊंगा। चुनान्चे जब मैं इज्तिमाअ़ गाह की पुरज़ौक़ फ़ज़ाओं में दाख़िल हुवा तो आंखें फटी की फटी रह गईं, हज़ारों नहीं बल्कि लाखों आ़शिक़ाने रसूल सरों पर सब्ज़ सब्ज़ इ़मामे का ताज सजाए सफ़ेद लिबास ज़ैबे तन किये सुन्नतें सीखने सिखाने में मसरूफ़ थे। उन का हर काम, हर हर अदा सुन्नते मुस्त़फ़ा की आईना दार थी। मेरे दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया, मैं शिकार करने आया था, यहां आ कर ख़ुद शिकार हो गया। दीने इस्लाम की इस रोशन तस्वीर को देख कर मेरे दिल की दुन्या ही बदल गई। इज्तिमाअ़ में मुझे मा'लूम हुवा कि येह तो क़ातेए़ शिर्को बिदअ़त हैं। येह तो ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मुह़िब हैं और मैं अब तक सरासर ग़फ़्लत और गुमराही का शिकार रहा हूं। इस माह़ोल से मु-तअस्सिर हो कर मैं ने गुज़श्ता गुनाहों से तौबा की और आइन्दा मुश्कबार म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी का अ़ज़्मे मुसम्मम कर लिया।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! इन्सानी रूप में शैत़ान, हमारे ईमान के चोर हर वक़्त ताक में लगे रहते हैं। ईमान की सलामती के

लिये म-दनी माहोल के साएबान के नीचे आ जाइये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ करम हो जाएगा।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿7﴾ चरसी की इस्लाह़ का राज़

बाबुल मदीना (कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : मैं फ़िल्में देखने का शाइक़ था। वालिदैन की ना फ़रमानी तो मेरे लिये कोई बड़ी बात न थी, न सिर्फ़ येह बल्कि चरस व शराब जैसे नशे की लत पड़ गई थी। मुआ़-शरे में मेरी कोई इ़ज़्ज़त न थी बल्कि अपनी ह़-रकात की वजह से बहुत बदनाम था। एक रोज़ दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता एक इस्लामी भाई ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए मुझे सुन्नतों भरे बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ की दा'वत पेश की। पहले तो मैं टाल मटोल करता रहा बिल आख़िर उस इस्लामी भाई के इस्रार पर सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ के लिये तय्यार हो गया और इज्तिमाअ़ गाह की पुर लुत़्फ़ फ़ज़ाओं में पहुंच गया। यूं तो सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की हर घड़ी ही दिल नशीन थी मगर जब मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی ने अपने पुरसोज़ अन्दाज़ में बयान फ़रमाया तो उन के अल्फ़ाज़ तीर ब हदफ़ का काम कर गए, मेरे दिल की दुन्या बदल गई और ख़ौफ़े ख़ुदा से मेरे रोंगटे खड़े हो गए। आंखों से अश्के नदामत का एक सैलाब उमंड आया। मैं ने रो रो कर अपने गुनाहों से तौबा की और

दिल ही दिल में निय्यत कर ली कि अब اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरी ज़िन्दगी बसर करूंगा । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की ब-र-कत से मुझे सलामती की राह नसीब हो गई और बाराने रह़मत की ऐसी फुवार बरसी कि मैं सुन्नतों भरी ज़िन्दगी बसर करने वाला बन गया । सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत के बा'द तरबिय्यती कोर्स में दाख़िला ले लिया । कोर्स के दौरान जब घर गया तो म-दनी रंग मुझ पर अपनी बहारें लुटा रहा था । मेरे लिबास, आ़दात, और त़र्ज़े ज़िन्दगी से घर के अफ़राद बहुत मु-तअस्सिर हुए बल्कि घर के बा'ज़ अफ़राद तो अदब से हाथ चूमने लगे । मुझ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ऐसा करम हुवा कि कल तक जो दूसरों के लिये निशाने इ़ब्रत था, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की ब-र-कत से दूसरों के लिये ज़र्बुल मसल बन गया ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾8﴿ दह़रिये की तौबा

राजन पूर (पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई अपनी तौबा के अह़वाल कुछ इस त़रह़ बयान करते हैं : मैं एक सोश्यलिस्ट तह़रीक से वाबस्ता था और مَعَاذَاللّٰہ दह़रिया अ़क़ाइद रखता था । एक रोज़ मेरे कज़िन ने बातों ही बातों में कहा कि दा'वते इस्लामी का बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ होने वाला है, चलो घूम फिर कर

आते हैं । इज्तिमाअ़ के बहाने सैर भी हो जाएगी । चुनान्चे हम सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पहुंच गए, पहले दिन तो घूमते फिरते रहे दूसरे दिन जब शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सुन्नतों भरा बयान शुरूअ़ हुवा तो कानों के रास्ते अल्फ़ाज़ मेरे दिल की गहराइयों में उतरते चले गए । वलिय्ये कामिल के पुर तासीर बयान से मेरा दिल चोट खा गया और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ ने तो मेरी सोच को बिल्कुल बदल दिया । नदामत व शरमिन्दगी के आसार ग़ालिब आ गए । चुनान्चे मैं ने सिद्क़े दिल से बात़िल अ़क़ाइद व न-ज़रिय्यात से तौबा की और निय्यत कर ली कि आइन्दा सुन्नतों भरी ज़िन्दगी बसर करूंगा, नीज़ रूह़ानी प्यास बुझाने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ग़ुलामी का पट्टा गले में डाल लिया । येह बयान देते वक़्त मैं डिवीज़न मुशा-वरत में क़ाफ़िला ज़िम्मादार की ह़ैसिय्यत से एह़याए सुन्नत के लिये कोशिश कर रहा हूं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें बात़िल अ़क़ाइद और बात़िल क़ुव्वतों से अमान अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमाए । आमीन

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾9﴿ शराब के नशे में मदहोश

मटयारी (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई अपनी ख़ज़ां रसीदा ज़िन्दगी में आने वाली बहार का तज़्किरा कुछ इस त़रह़ करते हैं : मैं शराब का ऐसा रसिया था कि हर वक़्त शराब के नशे में मदहोश रहता। लड़ाई झगड़ा, चोरों व बद मआ़शों की सोह़बत होटलों पर फ़ोहूश फ़िल्में देखना मेरे पसन्दीदा मशाग़िल थे। अल ग़रज़ मैं गुनाहों की पस्तियों में गिरता जा रहा था जिस की वजह से ज़िन्दगी के नादिर लम्ह़ात ज़ाएअ़ होने का एह़सास भी ख़त्म होता जा रहा था। सि. 1426 हि. ब मुत़ाबिक़ सि. 2005 ई. की बात है कि एक इस्लामी भाई ने मुझे दा'वते इस्लामी के बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत पेश की। मेरी ख़ुश बख़्ती कि मैं सुन्नतों भरे बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ में शिर्कत के लिये तय्यार हो गया। गुनाहों का बार लिये मुश्कबार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की पुर रौनक़ फ़ज़ाओं में पहुंच गया। तीन रोज़ा इज्तिमाअ़ में इख़्तिताम **रिक़्क़त अंगेज़ दुआ ने मेरे दिमाग़ पर छाए हुए ग़फ़्लत के पर्दे चाक कर दिये**, ख़ौफ़े ख़ुदा से मेरा दिल पसीज गया और मैं ने रो रो कर अपने रब عَزَّوَجَلَّ से अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगी और अ़ज़्मे मुसम्मम कर लिया कि आइन्दा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ तमाम बुराइयों से बचूंगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरी ज़िन्दगी में बहार आ गई, मैं ने चेहरे पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ दाढ़ी शरीफ़

सजा ली । ता दमे तह़रीर तह़सील सत्ह़ पर **शो'बए ता'लीम** के ज़िम्मादार की ह़ैसिय्यत से ख़िदमते दीन के लिये कोशां हूं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे इस्तिक़ामत की दौलत अ़त़ा फ़रमाए ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾10﴿ चोर ने माल वापस कर दिया

मदीनतुल औलिया मुलतान (पंजाब, पाकिस्तान) के एक मुक़ीम इस्लामी भाई का बयान है : मेरा कुल सरमाया मेरी एक दुकान है जिस से मेरा और मेरे घर वालों का गुज़र बसर होता है । एक दिन सुब्ह़ सुब्ह़ जैसे ही मैं अपनी दुकान पर पहुंचा तो मेरी आंखें फटी की फटी रह गईं कि दुकान का ताला टूटा हुवा था । मैं ने जूंही दरवाज़ा खोला तो येह देख कर मेरे पाउं तले से ज़मीन निकल गई कि मेरी दुकान से माल चोरी हो गया था । इस वाक़िए़ ने मेरी रातों की नींद और दिन का सुकून छीन लिया । वसाइल न होने के बाइ़स मैं कुछ न कर सका । एक रोज़ मैं ने अपनी इस परेशानी का तज़्किरा एक मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी से किया तो उन्हों ने मुझे बताया कि दा'वते इस्लामी के इज्तिमाअ़ में दुआ़एं क़बूल होने के बे शुमार वाक़िआ़त हैं । आप दिल छोटा न करें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बेहतरी करेगा । आप की ख़ुश क़िस्मती कि कुछ ही दिनों बा'द दा'वते इस्लामी का बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरा तीन रोज़ा इज्तिमाअ़ मुन्अ़क़िद हो रहा है आप इस में ज़रूर शिर्कत फ़रमाएं और दुआ़

मांगें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो चोर आप का माल वापस कर देंगे। मैं सोचने लगा कि चोर अब कैसे मुझे सामान वापस करेगा ? लेकिन मैं ने सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत का पुख़्ता इरादा कर ही लिया। आख़िर वोह दिन आ गया कि मदीनतुल औलिया मुलतान में हर त़रफ़ सब्ज़ सब्ज़ इ़मामे सजाए इस्लामी भाई नज़र आने लगे। मैं भी आख़िरी दिन सह़राए मदीना इज्तिमाअ़ गाह पहुंच गया जहां लाखों इस्लामी भाइयों का एक नया शहर आबाद था। जब दुआ़ होने लगी तो मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में रो रो कर दुआ़ करना शुरूअ़ कर दी "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस इज्तिमाए़ पाक की ब-र-कत से मेरी परेशानी दूर फ़रमा।" आप यक़ीन फ़रमाएं इज्तिमाअ़ के एक ही दिन बा'द **चोर ख़ुद ब ख़ुद मेरी दुकान पर आए, मुआ़फ़ी मांगी** और निहायत शरमिन्दगी से मेरा चोरी किया हुवा माल वापस कर गए। मैं काफ़ी देर तक महवे ह़ैरत रहा कि ऐसा भी होता है ? मगर येह सब दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की ब-र-कतें हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी को मज़ीद तरक़्क़ियां अ़त़ा फ़रमाए। आमीन

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾11﴿ नशे के मरीज़ को शिफ़ा

नवाब शाह (बाबुल इस्लाम सिन्ध) में मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : कुछ अ़र्सा पहले जब कि **दा'वते**

इस्लामी के बैनल अक़्वामी **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की आमद आमद थी। मैं ने एक इस्लामी भाई पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उन्हें बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ की दा'वत पेश की। इस पर उस इस्लामी भाई ने अपने जज़्बात का इज़्हार कुछ इस त़रह़ किया कि भाई **''मैं एक ऐसे मरज़ में मुब्तला हूं जिस की वजह से मैं इज्तिमाअ़ में नहीं जा सकता।''** मैं ने मह़ब्बत भरे अन्दाज़ में उन से पूछा कि आख़िर आप को ऐसा कौन सा मरज़ है ? तो उन्हों ने बताया कि ''बद क़िस्मती से मुझे नशे की लत पड़ चुकी है, मैं एक खाते पीते घराने से तअ़ल्लुक़ रखता हूं, हमारा एक मेडीकल स्टोर भी है अफ़्सोस बुरे दोस्तों की सोह़बत की नुहूसत ने मुझ पर ऐसा असर किया कि मैं जब भी स्टोर पर जाता तो ख़ुद को नशे के इन्जेक्शन लगाता। जब वालिद साह़िब को पता चला तो उन्हों ने मुझे बाबुल मदीना (कराची) के एक अस्पताल में दाख़िल करवाया और मेरे इ़लाज पर अच्छा ख़ासा पैसा ख़र्च किया। दो माह बा'द मैं मुकम्मल सिह़्ह़त याब हो कर घर वापस तो आ गया मगर कुछ ही दिनों बा'द मैं ने दोबारा ख़ुद को नशे के इन्जेक्शन लगाना शुरूअ़ कर दिये अब तो येह आ़दते बद इस क़दर पुख़्ता हो चुकी है कि एक ही दिन में 3 से 4 इन्जेक्शन लगाता हूं। अगर कभी येह ता'दाद पूरी नहीं होती तो मैं माहिये बे आब की मानिन्द तड़पने लगता हूं, अब आप ही बताइये मैं इज्तिमाअ़ में कैसे जा सकता हूं ?''

येह सुन कर मैं भी सोचने लगा कि वाक़ेई येह तो बहुत बड़ा मस्अला है मगर मैं ने उन का ज़ेहन बनाया कि आप अच्छे काम के लिये जा रहे हैं اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कोई मस्अला नहीं होगा **अल्लाह** तआ़ला बेहतर करेगा। चुनान्चे वोह इस्लामी भाई हमारे साथ वक़्ते मुक़र्ररा पर बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ में शिर्कत की निय्यत से मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ के लिये रवाना हो गए। गाड़ी सूए इज्तिमाअ़ गाह रवां दवां थी अभी कुछ ही फ़ासिला तै़ हुवा था कि अचानक उस इस्लामी भाई की त़बीअ़त ख़राब हो गई। नमाज़े अ़स्र की अदाएगी के लिये गाड़ी एक मक़ाम पर कुछ देर ठहरी तो मैं ने परेशानी के आ़लम में नमाज़े अ़स्र अदा करने के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उन इस्लामी भाई की सिह़्ह़त याबी के लिये गिड़गिड़ा कर दुआ़ की। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इज्तिमाअ़ में शिर्कत की निय्यत की ब-र-कत से मेरी दुआ़ क़बूल हुई और उन की त़बीअ़त कुछ बेहतर हो गई और हम इज्तिमाअ़ गाह (ब मक़ाम सह़राए मदीना मुलतान) में पहुंच गए। वहां पहुंच कर वोह कहने लगे मैं यहां नहीं रह सकता मुझे अभी वापस जाना है। मैं ने उन्हें तसल्ली देते हुए इज्तिमाअ़ के फ़ज़ाइल व ब-रकात सुनाए और इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए ख़ूब ज़ेहन बनाया कि اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इज्तिमाअ़ की ब-र-कत से आप तन्दुरुस्त हो जाएंगे और हम भी आप की सिह़्ह़त याबी के लिये दुआ़ करेंगे। इज्तिमाअ़ की ब-रकात

सुन कर उन का ज़ेहन बन गया। चुनान्चे वोह इस्लामी भाई हमारे साथ ही इज्तिमाअ़ में शरीक रहे। इज्तिमाअ़ से वापस आ कर हम सब अपने अपने कामों में मसरूफ़ हो गए, अल ग़रज़ उस इस्लामी भाई से मुलाक़ात का सिल्सिला न रह सका। कई माह बा'द जब उन से मेरी दोबारा मुलाक़ात हुई तो मैं ने उन की बदली हुई ह़ालत देख कर पूछा तो उन्हों ने मुझे येह ह़ैरत अंगेज़ बात बताई कि जब से मैं बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत कर के वापस लौटा हूं اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मेरी नशे की आ़दत ख़त्म हो चुकी है।** ता दमे तह़रीर तीन से चार साल का अ़र्सा गुज़र चुका है मेरे ज़ेह्न में कभी नशे की ला'नत का ख़याल तक नहीं गुज़रा।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾12﴿ झगड़ालू सुधर गया

बहावल नगर (पंजाब, पाकिस्तान) के अ़लाक़े मनचन आबाद में मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में आने से पहले मैं एक आवारा और निहायत बदकार शख़्स था। घर में फ़ारिग़ बैठा रहता, कोई काम न करता अगर घर वाले मुझे किसी काम का कहते तो उन के साथ مَعَاذَاللّٰہ न सिर्फ़ बद तमीज़ी से पेश आता बल्कि काम करने से भी इन्कार कर देता। मेरी ज़िन्दगी यूंही इ़स्यां के अंधेरों में गुज़रती जा रही थी। तंग आ कर मेरे वालिद ने मुझे एक दुकान पर काम करने

के लिये छोड़ दिया। अब दुकान से जो कुछ ख़र्चा मिलता उस से مَعَاذَاللّٰه न सिर्फ़ शराब पीता बल्कि दोस्तों के साथ आवारा गर्दी करने में बरबाद करता। मेरे सर पर हर वक़्त झगड़ा फ़साद करने का ऐसा जुनून सुवार रहता कि दिन में जब तक दो या तीन बार किसी से झगड़ा न कर लेता मुझे सुकून नहीं मिलता था। वालिदे मोह़तरम मेरी इन ह़-र-कतों से बहुत तंग आ चुके थे। बिल आख़िर र-मज़ानुल मुबारक की मुक़द्दस घड़ियां तशरीफ़ ले आईं, आख़िरी अ़शरे में मेरे एक दोस्त ने मुझे ए'तिकाफ़ की दा'वत पेश की तो मैं हाथों हाथ तय्यार हो गया मगर उन मुक़द्दस अय्याम में भी मैं अपने दोस्तों को दौराने ए'तिकाफ़ बहुत तंग किया करता। 27 र-मज़ानुल मुबारक को एक इस्लामी भाई मेरे पास तशरीफ़ लाए और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का एक रिसाला मुझे तोह़फ़े में दिया वोह रिसाला पढ़ कर मैं बहुत मु-तअस्सिर हुवा और आहिस्ता आहिस्ता म-दनी माह़ोल के क़रीब होने लगा और फिर जब दा'वते इस्लामी का बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ हुवा तो मैं ने उस में भी शिर्कत की, वहां पहुंच कर मुझे मज़ीद अपने गुनाहों पर एह़सासे नदामत हुवा, ए'तिकाफ़ की ब-र-कत से दिल तो पहले ही चोट खा चुका था। बस मैं ने अपने गुनाहों से तौबा की, दाढ़ी शरीफ़ रख ली **और सर पर इ़मामा**

शरीफ़ सजा लिया । आज जब मैं अपने **वालिदैन के हाथ चूमता हूं तो वोह ख़ुश होते हैं और मुझे बहुत दुआएं देते हैं ।** कल तक महल्ले के लोग अपने बच्चों को मेरे पास आने से मन्अ़ करते थे । आज वोही लोग कहते हैं कि हमारे बच्चों को भी दा'वते इस्लामी के इज्तिमाअ़ में ले जाया करो । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस वक़्त मैं दा'वते इस्लामी की मजलिसे हिफ़ाज़ती उमूर के ख़ादिम की हैसिय्यत से ख़िदमत सर अन्जाम दे रहा हूं ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾13﴿ गुर्दे की पथरी

रावल पिन्डी (पंजाब, पाकिस्तान) में रिहाइशी इस्लामी भाई का हलफ़िया बयान है : तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के ज़ेरे एहतिमाम मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में यकुम ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम सि. 1429 हि. ब मुताबिक़ 31 अक्तूबर सि. 2008 ई. में होने वाले बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में एक ऐसे इस्लामी भाई शरीक हुए जिन के गुर्दे में पथरी थी और डॉक्टरों ने सख़्ती से मन्अ़ कर दिया था कि वोह लम्बा सफ़र न करें लेकिन उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर नज़र रखते हुए इस निय्यत से इज्तिमाअ़ में शिर्कत की, कि वहां दुआ़ करने की ब-र-कत से बे शुमार मरीज़ों को शिफ़ा मिल जाती है, मु-तअ़द्दद की बिगड़ी संवर जाती है, कई

शु-रका के मुआ़शी ह़ालात बेहतर हो जाते हैं, वहां मांगी जाने वाली दुआ़एं क़बूल होती हैं, कुछ बई़द नहीं कि मुझे भी इज्तिमाअ़ में शिर्कत की ब-र-कत से शिफ़ा मिल जाए। चुनान्चे दौराने इज्तिमाअ़ उन्हों ने गिड़गिड़ा कर बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में दुआ़ की। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन की दुआ़ क़बूल हो गई और दौराने इज्तिमाअ़ ही जब वोह रफ़्ए़ ह़ाजत के लिये गए तो पथरी रेज़ा रेज़ा हो कर ख़ारिज हो गई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें इज्तिमाअ़ में गिड़गिड़ा कर मांगी जाने वाली दुआ़ओं के सदक़े **मोहलिक बीमारी से बिग़ैर ऑपरेशन नजात अ़त़ा फ़रमा कर ज़ेह्नी व क़ल्बी सुकून अ़त़ा फ़रमा दिया** اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर वोह बिल्कुल सिह़्ह़त याब हो चुके हैं। मज़ीद करम नवाज़ी येह हुई कि उन्हों ने दाढ़ी शरीफ़ भी सजा ली और पांच वक़्त के नमाज़ी, सुन्नतों के आ़दी बन गए।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾14﴿ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी छोड़ दीजिये

कबीर वाला (पंजाब) के मुक़ीम इस्लामी भाई ने अपने म-दनी माह़ोल में आने का वाक़िआ़ कुछ इस त़रह़ तह़रीर फ़रमाया कि दा'वते इस्लामी के मुश्कबार म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी से क़ब्ल मैं गुनाहों के गहरे समुन्दर में डूबा हुवा था, मेरा कोई दिन फ़िल्में डिरामे देखे और गाने बाजे सुने बिग़ैर न गुज़रता। घर में म-दनी माह़ोल न होने और बुरे दोस्तों की सोह़बत के बाइ़स नमाज़ें

क़ज़ा कर देना मेरी आ़दते बद बन चुकी थी। रात गए तक बद निगाही के कबीरा गुनाह में मश्ग़ूल रहता अल ग़रज़ मुआ़-शरे में पाई जाने वाली हर क़िस्म की छोटी बड़ी बुराइयां मेरे अन्दर मौजूद थीं। मेरी ख़ज़ां रसीदा बे अ़मल ज़िन्दगी में सुन्नतों की बहार कुछ इस त़रह़ आई कि शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत**, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ख़ून पसीने से सींची हुई तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल हुई। इज्तिमाअ़ में मुख़्तलिफ़ अवक़ात में मुबल्लिग़ीने दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे बयानात और तरबिय्यती ह़ल्क़ों ने मेरे दिल की दुन्या में हलचल मचा दी। इसी दौरान मुझे अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सुन्नतों भरा बयान बनाम **''गुनाहों का इ़लाज''** सुनने का मौक़अ़ नसीब हुवा जिस के हर हर जुम्ला व अल्फ़ाज़ को मैं ने दिल के कानों से सुना। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने बयान के दौरान एक ह़िकायत के तह़्त येह जुम्ले **''तो कितनी बे वफ़ाई की बात है कि हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का रिज़्क़ खाएं और फिर उस की त़रफ़ से आ़इद कर्दा ड्यूटी (Duty) न दें उस ने हमारे ज़िम्मे पांच वक़्त**

की ड्यूटी (Duty) लगाई मगर हम कोताही करें, माहे र-मज़ानुल मुबारक के रोज़े रखने की ज़िम्मादारी अ़ता फ़रमाई वोह भी न निभाएं, उस ने कसीर माल दिया और शराइत़ के साथ सिर्फ़ ढाई फ़ीसद सालाना ज़कात फ़र्ज़ की मगर हम कतराएं, उस ने लह-लहाते खेत और फलों से लदे बाग़ात से नवाज़ा और ''उ़श्र'' या ''ख़ुम्स'' फ़र्ज़ किया और अदा न करें। उस ने हुक्म फ़रमाया फ़ुलां फ़ुलां काम मत करो मगर फिर भी हम बराबर ना फ़रमानी किये जाएं। येह कितनी बे ग़ैरती की बात है कि उस की रोज़ी खा रहे हैं और उसी की ना फ़रमानी किये जा रहे हैं।'' इर्शाद फ़रमाए। जो मेरे दिल में तासीर का तीर बन कर पैवस्त हो गए। इज्तिमाअ़ की ब-र-कत से आप के मज़्कूरा बाला अल्फ़ाज़ सुन कर मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानियों से तहे दिल से मुंह मोड़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदारी में ज़िन्दगी गुज़ारने का मुसम्मम इरादा कर लिया, नेकियों से रिश्ता जोड़ लिया और दा'वते इस्लामी के महके महके मुश्कबार म-दनी माहोल से वाबस्ता हो गया हूं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आप भी म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये

ख़रबूज़े को देख कर ख़रबूज़ा रंग पकड़ता है, तिल को गुलाब के फूल में रख दो तो उस की सोहबत में रह कर गुलाबी हो जाता है। इसी तरह तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो कर आ़शिक़ाने रसूल की सोहबत में रहने वाला **अल्लाह** और उस के रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मेहरबानी से बे वक़्अ़त पथ्थर भी **अनमोल हीरा** बन जाता, ख़ूब जग-मगाता और ऐसी शान से पैके अजल को **लब्बैक** कहता है कि देखने सुनने वाला उस पर रश्क करता और ऐसी ही मौत की आरज़ू करने लगता है। आप भी तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये। अपने शहर में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत और **राहे ख़ुदा** में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र कीजिये और शैखे़ तरीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़ता कर्दा **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप को दोनों जहां की ढेरों भलाइयां नसीब होंगी।

मक़्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी
सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार मदीने का

ग़ौर से पढ़ कर येह फ़ॉर्म पुर कर के तफ़्सील लिख दीजिये

जो इस्लामी भाई **फ़ैज़ाने सुन्नत** या **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दीगर **कुतुब व रसाइल** सुन या पढ़ कर, बयान की केसिट सुन कर या हफ़्तावार, सूबाई व बैनल अक़्वामी **इज्तिमाआ़त** में शिर्कत या **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र या **दा'वते इस्लामी** के किसी भी म-दनी काम में शुमूलिय्यत की ब-र-कत से म-दनी माहोल से वाबस्ता हुए, ज़िन्दगी में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा हुवा, नमाज़ी बन गए, दाढ़ी, इ़मामा वग़ैरा सज गया, आप को या किसी अ़ज़ीज़ को हैरत अंगेज़ त़ौर पर **सिह्हत** मिली, परेशानी दूर हुई, या मरते वक़्त **कलिमए त़य्यिबा** नसीब हुवा या अच्छी ह़ालत में **रूह़ क़ब्ज़** हुई, मर्हूम को अच्छी ह़ालत में **ख़्वाब** में देखा, **बिशारत** वग़ैरा हुई या **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के ज़रीए आफ़ात व बलिय्यात से नजात मिली हो तो हाथों हाथ इस फ़ॉर्म को पुर कर दीजिये और एक सफ़हे पर वाक़िआ़ की तफ़्सील लिख कर इस पते पर भिजवा कर एह़सान फ़रमाइये **''फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास मिरज़ा पूर, अह़मद आबाद गुजरात (शो'बए अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **मजलिसे अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या)''**

नाम मअ़ वल्दिय्यत :..... उ़म्र..... किन से मुरीद या त़ालिब हैं..... ख़त़ मिलने का पता.....
फ़ोन नम्बर (मअ़ कोड) : .....ई मेइल एड्रेस .....
इन्क़िलाबी केसिट या रिसाले का नाम :..... सुनने, पढ़ने या वाक़िआ़ रूनुमा होने की तारीख़/महीना/ साल :..... कितने दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र किया :..... मौजूदा तन्ज़ीमी ज़िम्मादारी.....

मुन्दरिजए बाला ज़राएअ़ से जो ब-र-कतें ह़ासिल हुईं, फुलां फुलां बुराई छूटी वोह तफ़्सीलन और पहले के अ़मल की कैफ़िय्यत (अगर इ़ब्रत के लिये लिखना चाहें) म-सलन फ़ेशन परस्ती डकैती वग़ैरा और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते मुबा-रका से ज़ाहिर होने वाली **ब-रकात व करामात** के **''ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त''** मक़ाम व तारीख़ के साथ एक सफ़हे पर **तफ़्सीलन तह़रीर फ़रमा दीजिये ।**

म-दनी मश्वरा

اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ शैखे़ त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दौरे ह़ाज़िर की वोह यगानए रोज़गार हस्ती हैं कि जिन से श-रफ़े बैअ़त की ब-र-कत से लाखों मुसल्मान गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर **अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ के अह़काम और उस के **प्यारे ह़बीबे लबीब** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के मुत़ाबिक़ पुर सुकून ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं। ख़ैर ख़्वाहिये मुस्लिम के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त हमारा **म-दनी मश्वरा** है कि अगर आप अभी तक किसी जामेए़ शराइत़ पीर साहिब से बैअ़त नहीं हुए तो शैखे़ त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के फ़ुयूज़ो़ ब-रकात से **मुस्तफ़ीद** होने के लिये इन से **बैअ़त** हो जाइये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में काम्याबी व सुर्ख़-रूई नसीब होगी।

मुरीद बनने का त़रीक़ा

अगर आप मुरीद बनना चाहते हैं तो अपना और जिन को **मुरीद या त़ालिब** बनवाना चाहते हैं उन का नाम नीचे तरतीब वार मअ़ वल्दिय्यत व उ़म्र लिख कर **''मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्त़ारिय्या म-दनी मर्कज़ दा'वते इस्लामी शाही मस्जिद, शाहे आ़लम दरवाज़ा के सामने, अह़मद आबाद गुजरात''** के पते पर रवाना फ़रमा दें तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हें भी सिल्सिलए **क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्त़ारिय्या** में दाख़िल कर लिया जाएगा।

(पता अंग्रेज़ी के केपीटल ह़ुरूफ़ में लिखें)

E.Mail : attar@dawateislami.net

(1) नाम व पता बॉल पेन से और बिल्कुल साफ़ लिखें, ग़ैर मश्हूर नाम या अल्फ़ाज़ पर लाज़िमन ए'राब लगाएं। अगर तमाम नामों के लिये एक ही पता काफ़ी हो तो दूसरा पता लिखने की ह़ाजत नहीं। (2) एड्रेस में मह़रम या सर परस्त का नाम ज़रूर लिखें। (3) अलग अलग मक्तूबात मंगवाने के लिये जवाबी लिफ़ाफ़े साथ ज़रूर इरसाल फ़रमाएं।

नम्बर शुमार	नाम	मर्द/ औ़रत	बिन/ बिन्ते	बाप का नाम	उ़म्र	मुकम्मल एड्रेस

म-दनी मश्वरा : इस फ़ॉर्म को मह़फ़ूज़ कर लें और इस की मज़ीद कॉपियां करवा लें।